एकलव्य

पहला घर

The First House

एक संथाली लोककथा
A Santhali Folktale

कला: रानू टाइटस
Art: Ranu Titus

पहला घर

एक संथाली लोककथा

The First House

A Santhali Folktale

पुनर्कथन: जेन साही
कला: रानू टाइटस

Retold by: Jane Sahi
Art: Ranu Titus

एकलव्य का प्रकाशन

पहला घर / THE FIRST HOUSE

एक संथाली लोककथा / A Santhali folktale

पुनर्कथनः जेन साही / Retold by Jane Sahi

अँग्रेज़ी से अनुवादः शिवनारायण गौर / Translated from English by Shivnarayan Gour

कलाः रानू टाइटस / Art: Ranu Titus

© एकलव्य / नवम्बर 2009 / 5000 प्रतियाँ

इस किताब के किसी भी भाग का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उपयोग के लिए इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिन्ह के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का उल्लेख करें और एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

Any part of this book may be used for non-commercial educational purposes under a similar copyleft mark. Mention this book as the source and inform Eklavya. For any other kind of use, kindly contact Eklavya.

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।

100 gsm मेपलिथो व 130 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित।

ISBN: 978-81-89976-61-3

मूल्यः 20.00 रुपए

प्रकाशकः

एकलव्य, ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः बॉक्स कॉरोगेटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोनः (0755) 258 7551

बहुत पहले लोग घरों में नहीं रहते थे। वे पेड़ों के नीचे या गुफाओं में शरण लेते थे। पर बरसात, ठण्ड, आँधी और कड़ी धूप में वहाँ रहना बहुत कठिन था।

एक दिन दो दोस्तों ने तय किया कि वे घर में रहेंगे। किन्तु शुरुआत कैसे करें?

Long ago people did not live in houses. They took shelter under trees or in caves. But it was very difficult in the rain and the cold and in the wind and the hot sun.

One day two friends decided that they would like to live in a house. But how to begin?

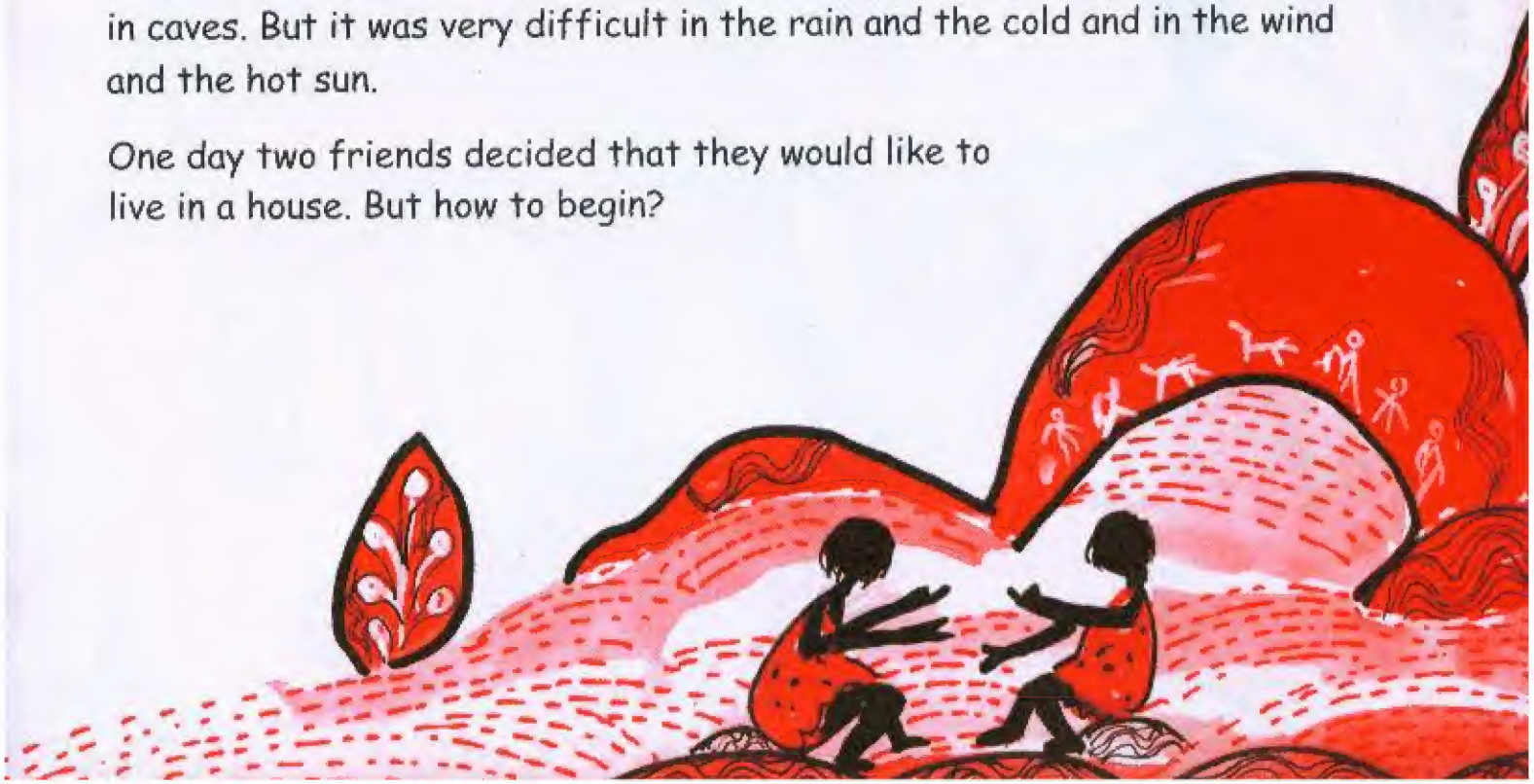

दोनों दोस्तों ने हाथी के पास जाकर पूछा कि उन्हें शुरुआत कैसे करनी चाहिए। हाथी ने कुछ सोचकर कहा, "तुम्हें मेरे पैरों की तरह मज़बूत और मोटे चार खम्बे बनाने होंगे। पर आगे मुझसे मत पूछना क्योंकि मुझे नहीं पता।"

दोनों ने वैसा ही किया जैसा कि हाथी ने सुझाया था और चार मोटे खम्बे बनाए।

The two friends went and asked an elephant how they should begin. The elephant thought and then said, "You must make four pillars as strong and as thick as my four legs. But don't ask me what to do next because I have no idea."

They did as the elephant had suggested and made four strong pillars.

फिर वे साँप के पास गए और उससे पूछा कि उन्हें आगे क्या करना चाहिए। साँप ने थोड़ी देर सोचा और तब कहा, "तुम्हें कुछ बल्लियाँ बनानी होंगी, मेरे जैसी पतली और लम्बी। पर आगे मुझसे मत पूछना क्योंकि मुझे नहीं मालूम।"

दोनों दोस्तों ने वैसा ही किया जैसा साँप ने सुझाया था पर घर तो अभी भी नहीं बना था।

Then they went to a snake and asked him what they should do next. The snake thought for a while and then said, "You must make some poles as long and thin as I am. But don't ask me what to do next because I have no idea."

The two friends did as the snake had suggested but the house was still far from finished.

फिर वे दोनों एक भैंस के पास गए और उससे पूछा कि आगे क्या करें। भैंस ने सोचा और कहा, "तुमने उस मरे हुए भैंसे का कंकाल देखा है? तुम्हें इसी तरह का छत बनाना होगा। पर मुझसे मत पूछना कि आगे क्या करना है क्योंकि मैं नहीं जानती।"

दोनों दोस्तों ने वैसा ही किया जैसा कि भैंस ने बताया था, लेकिन घर तो अब भी पूरा नहीं हुआ था।

Then they went to a she-buffalo and asked her what to do next. The she-buffalo thought and then said, "You see the skeleton of this dead buffalo? You must make a roof like that. But don't ask me what to do next because I have no idea."

The two friends did just as the she-buffalo had suggested but the house was still not finished.

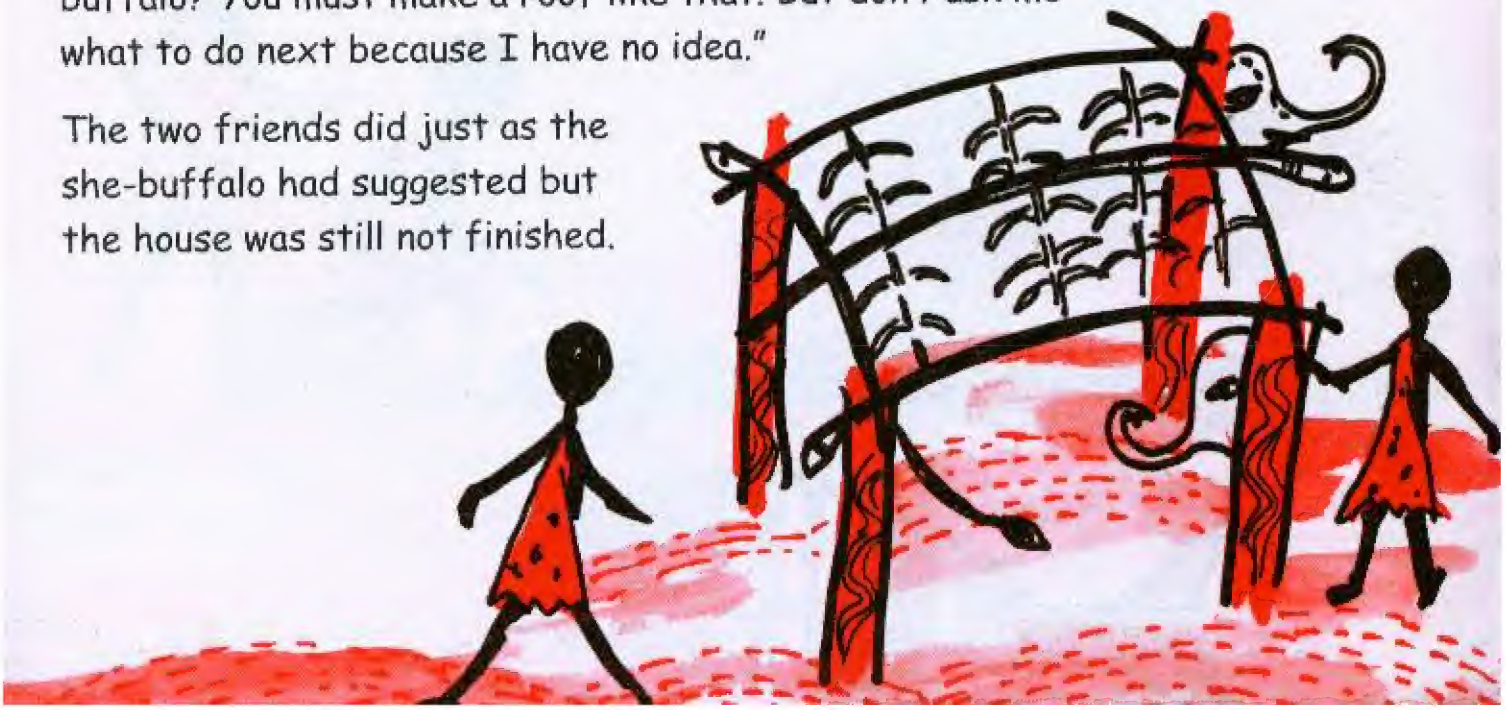

आगे वे एक मछली के पास गए और मछली ने उनसे कहा, "मेरे शल्कों को देखो। तुम्हें सूखी पत्तियों से ऐसी ही परतें बिछाकर छत तैयार करनी होगी। बिलकुल मेरी शल्कों की तरह।"

Next they went to a fish and the fish said to them, "See the scales on me! You must make a covering for the roof using layer upon layer of dried leaves. Just like my scales."

दोनों दोस्तों ने वैसा ही छत बनाया और अब उनके पास एक घर था जो उन्हें आँधी, बरसात, गर्मी और ठण्ड से बचा सकता था।

The two friends made the roof and now they had a house that sheltered them from the wind, the rain, the heat, and the cold.

The First House

Long ago people did not live in houses. They took shelter under trees or in caves. But it was very difficult in the rain and the cold and in the wind and the hot sun.

One day two friends decided that they would like to live in a house. But how to begin?

The two friends went and asked an elephant how they should begin. The elephant thought and then said, "You must make four pillars as strong and as thick as my four legs. But don't ask me what to do next because I have no idea."

They did as the elephant had suggested and made four strong pillars.

Then they went to a snake and asked him what they should do next. The snake thought for a while and then said, "You must make some poles as long and thin as I am.

But don't ask me what to do next because I have no idea."

The two friends did as the snake had suggested but the house was still far from finished.

Then they went to a she-buffalo and asked her what to do next. The she-buffalo thought and then said, "You see the skeleton of this dead buffalo? You must make a roof like that. But don't ask me what to do next because I have no idea."

The two friends did just as the she-buffalo had suggested but the house was still not finished.

Next they went to a fish and the fish said to them, "See the scales on me! You must make a covering for the roof using layer upon layer of dried leaves. Just like my scales."

The two friends made the roof and now they had a house that sheltered them from the wind, the rain, the heat, and the cold.

पहला घर

बहुत पहले लोग घरों में नहीं रहते थे। वे पेड़ों के नीचे या गुफाओं में शरण लेते थे। पर बरसात, ठण्ड, आँधी और कड़ी धूप में वहाँ रहना बहुत कठिन था।

एक दिन दो दोस्तों ने तय किया कि वे घर में रहेंगे। किन्तु शुरुआत कैसे करें?

दोनों दोस्तों ने हाथी के पास जाकर पूछा कि उन्हें शुरुआत कैसे करनी चाहिए। हाथी ने कुछ सोचकर कहा, "तुम्हें मेरे पैरों की तरह मज़बूत और मोटे चार खम्बे बनाने होंगे। पर आगे मुझसे मत पूछना क्योंकि मुझे नहीं पता।"

दोनों ने वैसा ही किया जैसा कि हाथी ने सुझाया था और चार मोटे खम्बे बनाए।

फिर वे साँप के पास गए और उससे पूछा कि उन्हें आगे क्या करना चाहिए। साँप ने थोड़ी देर सोचा और तब कहा, "तुम्हें कुछ बल्लियाँ बनानी होंगी, मेरे जैसी पतली और लम्बी। पर आगे मुझसे मत पूछना क्योंकि मुझे नहीं मालूम।"

दोनों दोस्तों ने वैसा ही किया जैसा साँप ने सुझाया था पर घर तो अभी भी नहीं बना था।

फिर वे दोनों एक भैंस के पास गए और उससे पूछा कि आगे क्या करें। भैंस ने सोचा और कहा, "तुमने उस मरे हुए भैंसे का कंकाल देखा है? तुम्हें इसी तरह का छत बनाना होगा। पर मुझसे मत पूछना कि आगे क्या करना है क्योंकि मैं नहीं जानती।"

दोनों दोस्तों ने वैसा ही किया जैसा कि भैंस ने बताया था, लेकिन घर तो अब भी पूरा नहीं हुआ था।

आगे वे एक मछली के पास गए और मछली ने उनसे कहा, "मेरे शल्कों को देखो। तुम्हें सूखी पत्तियों से ऐसी ही परतें बिछाकर छत तैयार करनी होगी। बिलकुल मेरी शल्कों की तरह।"

दोनों दोस्तों ने वैसा ही छत बनाया और अब उनके पास एक घर था जो उन्हें आँधी, बरसात, गर्मी और ठण्ड से बचा सकता था।

ISBN: 978-81-89976-61-3

एकलव्य
parag

मूल्य: 20.00 रुपए

A0113B